ग्राउंडेड थ्योरी / आधारभूत सिद्धांत / जमीनी सिद्धांत

डॉ० साधना सक्सेना

ग्राउंडेड थ्योरी सामाजिक विज्ञानिओं द्वारा किए गए गुणात्मक शोधों पर आधारित एक व्यवस्थित कार्य प्रणाली या प्रक्रिया है, इसे जमीनी सिद्धांत या आधारभूत सिद्धांत भी कहा जाता है।इसमें आगमनात्मक विधि का प्रयोग करके नवीन सिद्धांत निर्माण किया जाता है और यह प्रक्रिया पारंपरिक वैज्ञानिक अनुसंधान में प्रयुक्त किए जाने वाले हाइपोथेटिको - डिडिक्टिव मॉडल के विपरीत है। ग्राउंडेड थ्योरी को समाजविज्ञानी, वार्ने ग्लेसर और एन्स्लेम स्ट्रॉस ने 1967 में अपनी पुस्तक "डिस्कवरी ऑफ ग्राउंडेड थ्योरी (Discovery of Grounded Theory" में प्रस्तुत किया। उन्होंने इस उपागम को इम्पिरिकल डेटा पर इस विकास क्रम द्वारा प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी पुस्तक "अवेयरनेस ऑफ डाइंग(Awareness of Dying" में एक तुलनात्मक अध्ययन को प्रस्तुत किया, और बाद में इसे ही ग्राउंडेड थ्योरी या जमीनी सिद्धांत के नाम से जाना गया। ज़मीनी सिद्धांत एक आधारभूत उपागम है जो कि मुख्य रूप से गुणात्मक प्रकार का अनुसंधान होता है।

Thus, Grounded Theory refers to the process of generalization of theory which is based on collection of data from multiple sources.

इस प्रकार यह किसी सिद्धांत के निर्माण की वह प्रक्रिया है जो कि विभिन्न सूचनाओं से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित होती है, ग्राउंडेड थ्योरी या जमीनी सिद्धांत कहलाती है। इस सिद्धांत में आँकड़ों के भीतर से ही सिद्धांत को विकसित किया जाता है, इसलिए इसे ग्राउंडेड थ्योरी कहा जाता है।

Grounded Theory is called "Grounded" because the theory is grounded in Data.

यह एक प्रकार का गुणात्मक अनुसंधान होता है परंतु आवश्यकता पड़ने पर मात्रात्मक आंकड़ों का प्रयोग इसमें किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि कुछ बीजों को मिला कर लिया जाए और यह जानने का प्रयास किया जाए कि ये किस पौधे के बीज है तो उन्हें उगाना आवश्यक होगा,इसमें बीज, आंकड़ों का उदाहरण है, और फल उस प्रक्रिया के द्वारा विकसित सिद्धांत का उदाहरण होंगे जिसका प्रयोग किया गया। इसी प्रकार जमीनी सिद्धांत या ग्राउंडेड थ्योरी में आंकड़ों में छिपी सूचनाओं से सिद्धांत का निर्माण करने की प्रक्रिया है।अन्य उदाहरण दुर्खीम द्वारा प्रतिपदित

आत्महत्या का सिद्धांत ज़मीनी सिद्धांत है। ज़मीनी सिद्धांत के आंकड़ों की व्याख्या व विश्लेषण आंकड़े एकत्रीकरण के साथ-साथ ही किया जाता है ना कि शोध के आंकड़ों को एकत्रित करने के संग्रहण करने के बाद।

ग्राउंडेड थ्योरी के मुख्य तीन बिंदु है-

- सामाजिक विज्ञान सिद्धांत और अनुभवजन्य आंकड़ों के बीच अंतर को कम करके अनुभवजन्य सिद्धांत को मजबूती से लागू करने का काम किया जाए।
- आधारभूत जमीनी सिद्धांत के लिए तर्क प्रदान करना।
- इनका मुख्य उद्देश्य गुणात्मक शोध को वैध बनाना सबसे महत्वपूर्ण बिंदु था क्योंकि 1960 के दशक में मात्रात्मक शोधविधियां इतनी प्रसिद्ध हो गयीं थी कि शोधकर्ता गुणात्मक शोध को अपर्याप्त मानने लगे थे।

इस सिद्धांत की स्वीकृति **"अवेयरनेस ऑफ डाइंग(Awareness of Dying)"** के प्रकाशन के बाद हुई। इसने चिकित्सा क्षेत्र, मनोविज्ञान और मनोरोग विज्ञान में ग्राउंडेड थ्योरी को स्थापित किया और वर्तमान में ज़मीनी सिद्धांत- नाटक, प्रबंधन, विनिर्माण और शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रयुक्त किया जा रहा है।

ग्राउंडेड थ्योरी के उद्देश्य-

- **सही सिद्धांत का निर्माण-** जब किसी व्यवस्थित प्रक्रिया के चरणों का पालन करते हुए विभिन्न प्रकार के माध्यमों से एक उपागम के लिए कार्य किया जाता है, तो सही सिद्धांत या अच्छे सिद्धांत का निर्माण होता है।यही, इस जमीनी सिद्धांत को मुख्य उद्देश्य है।
- **मूल्यांकन पर विशेष ध्यान-** इस उपागम में सिद्धांत की मूल्यांकन प्रक्रिया पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिससे सिद्धांत की गुणवत्ता प्रभावित ना हो। इसके लिए इस सिद्धांत में आंकड़ों का विश्लेषण समय-समय पर किया जाता है।
- **सिद्धांतिक ग्रहणशीलता या संवेदनशीलता-** इस सिद्धांत के आंकड़ों के ग्रहणशीलता पर बल दिया जाता है। आंकड़े उसी प्रक्रिया से संबंधित होना आवश्यक है जो कि सिद्धांत से संबंधित है।अन्यथा आंकड़े सिद्धांत को प्रभावित कर देंगे।

- **संकल्पनात्मक विचार-** ज़मीनी सिद्धांत में परिकल्पना का निर्माण संकल्पनात्मक विचार पर आधारित होता है। इसमें परिकल्पना का निर्माण पहले से न करके आंकड़े एकत्रित करने के दौरान किया जाता है। समस्या समाधान पर आधारित पर इस उपागम में शोधकर्ता इस प्रकार से प्रश्नों पूंछता कि समस्या समाधान की ओर बढ़ा जा सके।इसमें प्रतिभागियों से इस प्रकार के प्रश्न किए जाते हैं जैसे- कि क्या चल रहा है? जिससे सिद्धांत की निर्माण प्रक्रिया को सही से जाना और समझा जा सके।उदाहरण के लिए।यदि कर्मचारियों ने तनाव को दूर करने के लिए प्रश्न पूछना और अवलोकन करना।
- **समय व स्थान को हटाकर प्रत्यय निर्माण करना-** इस सिद्धांत में लोगों के समय व स्थान को ध्यान में नहीं रखा जाता, बल्कि प्रत्ययों के निर्माण और प्रत्ययों के उदाहरण को मुख्य रूप से वर्णित किया जाना इसका मुख्य उद्देश्य होता है।

ग्राउंडेड थ्योरी या आधारभूत सिद्धांत के प्रकार- क्रॉस वेल (2012) ने जमीनी सिद्धांत के तीन अभिकल्प या प्रकार बताए है-

i. क्लासिकल ग्राउंडेड थ्योरी/ शास्त्रीय जमीनी सिद्धांत (Emerging Grounded/Classical Grounded Theory).
ii. मोडीफ़ाइड ग्राउंडेड थ्योरी/व्यवस्थित जमीनी सिद्धांत (Modified Grounded Theory/Systematic Grounded Theory).
iii. रचनात्मक ज़मीनी सिद्धांत (Constructive Grounded Theory)

i. **क्लासिकल ग्राउंडेड थ्योरी/ शास्त्रीय जमीनी सिद्धांत:** यह सिद्धांत ग्लेसर व स्ट्रास की किताब (1967) 'द डिस्कवरी ऑफ ग्राउंडेड थ्योरी' (The Discovery of Grounded Theory) पर आधारित है।इस प्रकार का आधारभूत सिद्धांत केवल विश्लेषणात्मक उपागम नहीं होता है बल्कि यह सिद्धांत निर्माण की एक विधि है। इसमें आंकड़े ही सब कुछ होते हैं जिसमें शोधकर्ता अन्य साहित्यिक कार्य के साथ अपने क्षेत्रीय अध्ययन को साथ लेकर चलता है।लेकिन साहित्यिक आंकड़ों का परीक्षण पहले नहीं करता है। क्योंकि इससे परिणाम प्रभावित हो सकते हैं।इस प्रकार के सिद्धांत में आधारभूत सिद्धांत में विकसित करते समय कोडिंग प्रक्रिया को एक-दो बार प्रक्रिया को दोहराया जाता है। इस प्रक्रिया में डेटा संग्रह, कोडिंग और विश्लेषण का एक सतत चक्र शामिल है, जिसका उद्देश्य डेटा पर आधारित श्रेणियों और उपश्रेणियों को विकसित करना है। फिर श्रेणियों और उपश्रेणियों की तुलना की जाती है और एक सिद्धांत

उत्पन्न करने के लिए संश्लेषित किया जाता है जो घटना को समझाता है। ग्राउंडेड थ्योरी के इस सिद्धांत में अगमनात्मक विधि से सिद्धांत विकसित किया जाता है, अर्थात इसमें शोधकर्ता सरल से कठिन की ओर विधि से सिद्धांत विकसित करता है।

ii. **मोडीफ़ाइड ग्राउंडेड थ्योरी / व्यवस्थित जमीनी सिद्धांत:** मॉडिफाइड या व्यवस्थित जमीनी सिद्धांत या ग्राउंडेड थ्योरी के इस प्रकार को व्यवस्थित जमीनी सिद्धांत के नाम से जाना जाता है। इसका अध्ययन शोधकर्ता द्वारा अत्यधिक व्यवस्थित स्वरूप से किया जाता है और गुणात्मक आंकड़ों की कोडिंग और संरचना पर इसमें अधिक विशेष ध्यान दिया जाता है। यह एक पारंपरिक विधि है। जिसमें कभी-कभी दो या तीन चरणों में भी कोडिंग की प्रक्रिया को दोहराया जाता है। इस अभिकल्प को शिक्षा के क्षेत्र में अधिक प्रयोग किया जाता है इसके आंकड़ों को एकत्रित करने की प्रक्रिया में तीन चरण होते हैं।

- मूल नमूना/कोडिंग (Open Coding)
- अक्षीय नमूना/कोडिंग (Axial Coding)
- चयनात्मक नमूना/कोडिंग (Selective coding)

इस प्रकार के सिद्धांत में इन्हीं तीन चरणों को ध्यान में रखकर ही आंकड़ों को शोधकर्ता द्वारा एकत्रित किया जाता है।

iii. **रचनात्मक ज़मीनी सिद्धांत:** यह दृष्टिकोण चार्माज़ के काम पर आधारित है, और सिद्धांत विकास की प्रक्रिया में शोधकर्ता की भूमिका पर जोर देता है। इसका ध्यान यह समझने पर है कि व्यक्ति किस तरह से अर्थ का निर्माण करते हैं और अपने अनुभवों की व्याख्या करते हैं, न कि किसी वस्तुपरक सत्य की खोज पर। इसका अर्थ है कि शोधकर्ता शोध करते समय अपने पूर्व अनुभवो को अपने शोध में शमिल करता है क्योकि शोधकर्ता अपने शोध से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का भलीभांति अध्ययन करता है। इस प्रकार के आधारभूत सिद्धांत में शोधकर्ता का मुख्य उद्देश्य प्रतिभगियों के अनुसार किसी प्रक्रिया की वास्तविकता को जांचना होता है। शोधकर्ता पहले अपने शोध के साहित्य का गहन अध्ययन करता है और फ़िर प्रतिभगियों के साथ कार्य करता है। इसमें शोधकर्ता आंकडों के आधार पर व्याख्या करता है। ग्राउंडेड थ्योरी के इस प्रकार का मुख्य उद्देश्य ग्राउंडेड थ्योरी के इस विचार को नकार देना जिसके अनुसार सिद्धांत की 'खोज' केवल आंकडों से ही की जा सकती है। इसमें कोडिंग के निम्न्लिखित चरण है-

- मूल (Open coding)कोडिंग
- केन्द्रीय कोडिंग (Focus Coding)
- सैद्धांतिक कोडिंग(Theoritical Coding)

ग्राउंडेड थ्योरी का यह प्रकार जानने का प्रयत्न करता है कि खोज भेदभाव पूर्ण हो सकती है क्योंकि शोधकर्ताओ और प्रतिभगियों की किसी अनुभव के बारे में समाज और वास्तविकता के बारे में अपनी कुछ समझ होती है।

शास्त्रीय/ व्यवस्थित/ रचनात्मक जमीनी सिद्धांत में अंतर:

प्रकार	**कोडिंग या नमूना एकत्र करने की विधि**		
	प्रारम्भिक स्तर	मध्य स्तर	उन्नत स्तर
शास्त्रीय	मूल नमूना (Open)	चयनात्मक नमूना (Selective)	सैद्धांतिक नमूना (Theoritical)
व्यवस्थित	मूल नमूना (Open)	अक्षीय नमूना (Axia)	चयनात्मक नमूना (Selective)
रचनात्मक	प्रारम्भिक नमूना (Initial)	केन्द्रीय नमूना (Focus)	सैद्धांतिक नमूना (Theoritical)

ग्राउंडेड थ्योरी के शोध में प्रयुक्त चरण-

ग्राउंडेड थ्योरी अध्ययन आयोजित करने के लिए कुछ सामान्य दिशा-निर्देश इस प्रकार हैं:

- **एक शोध प्रश्न का चुनाव करना :** एक शोध प्रश्न चुनाव किया जाता है, इस प्रकार के शोध में शोध प्रश्न का चुनव करते समय शोध नैतिकता का ध्यान रखा जाता है और किसी विशिष्ट सामाजिक घटना या समस्या पर केंद्रित हो।इस प्रकार के शोध में पहले किसी प्रकार का साहित्य का अध्ययन नही किया पहले नही किया जाता है क्योंकि इससे निष्कर्ष प्रभावित होने का भय होता है।

- **परिकल्पना निर्माण:** ग्राउंडेड थ्योरी / जमीनी सिद्धांत में पहले से किसी प्रकार की परिकल्पना का निर्मण नहीं किया जाता है अहि। इस सिद्धांत में गुणात्मक आंकड़ों से परिकल्पना निर्माण करने के विभिन्न अवसर मिलते हैं। परिकल्पना निर्माण के बाद भी कल्पनाओं को स्वीकार करना या अस्वीकार करना शोधकर्ता पर निर्भर करता है। आधारभूत सिद्धांत या जमीनी सिद्धांत में शोधकर्ता 'क्या चल रहा है?' जैसे प्रश्न प्रतिभागियों से करता है। प्रतिभागियों की समस्या व इसके समाधान करने के प्रयास करना शोधकर्ता के लिए मुख्य कार्य होता है। इस सिद्धांत में शोधकर्ता 'सत्य' की खोज करने का लक्ष्य नहीं रखता है। बल्कि इसमें प्रतिभागियों के जीवन के कार्यकलापों को समझकर आंकड़े एकत्र किए जाते हैं और शोधकर्ता नवीन अवधारणा बनाने का प्रयास करता है। यही धारणाएं परिकल्पना निर्माण में शोधकर्ता की सहायता करती है और सिद्धांत केलिए घटक बन जाती है।
- **प्रतिभागियों का चयन करना और आंकडों का संग्रहण** : प्रतिभागियों के एक विविध समूह की पहचान करें जिन्होंने अध्ययन की जा रही घटना का अनुभव किया है। सटीक और विभिन्न प्रकार के आंकडें एकत्र करने के लिए साक्षात्कार, अवलोकन और दस्तावेज़ विश्लेषण जैसी आंकडें संग्रह करने वाली विधियों का उपयोग किया जाता है।

आंकड़े एकत्र करने के लिए उपकरण -

1. साक्षात्कार
2. अवलोकन
3. प्रपत्र
4. समूह
5. क्षेत्र अध्ययन
6. मीडिया

आंकड़ों को एकत्र करने के लिए विधि-

1. संक्षेपण करना(Memoing)

2. आंकड़ों को छंटना या संगठित करना

I. सैद्धन्तिक लेखन

II. क्षेत्र अध्ययन

III. कोडिंग करना या नमूनाकरण

1. **संक्षेपण करना-** इसमें शोधकर्ता एकत्रित जानकारी को संक्षेप में लिखता जाता है जिससे सिद्धान्त निर्माण को दिशा दी जा सके। इसके निम्नलिखित चरण होते है-

I. **सैद्धन्तिक लेखन-**इसमें शोधकर्ता अपने अध्ययन के लिए साहित्यिक जानकारी एकत्र करता है। यह जानकारी लिखित रुप 4-5 पृष्ठ की हो सकती है,इससे शोधकर्ता को निष्कर्ष प्राप्त करने में सुविधा होती है।

II. **क्षेत्र अध्ययन-**जब शोधकर्ता अपने सिद्धांत निर्माण के लिए क्षेत्र मे जाकर अवलोकन,साक्षात्कार आदि के माध्यम से जानकारी एकत्र करता है और इसे लिखकर एकत्र करता जाता है तो यह क्षेत्र अध्ययन कहलाता है।

III. कोडिंग करना या नमूनाकरण-

इसके तीन प्रकार होते है-

मूल कोडिंग(Open Coding)-पहले स्तर पर शोधकर्ता शोध के प्रारम्भ में प्रतिभागियों से जो विचार प्राप्त कर्ता है उन विचारों लिख लेता है जिसमें एक जैसे विचारों को एक स्थान पर लिखता है, इस प्रकार इन विचारों को अपनी समझ के अनुसार अलग-अलग श्रेणियां में बांट लेता है।

चयनात्मक कोडिंग(Selective Coding)-इस स्तर पर शोधकर्ता अपने मुख्य चर की दिशा में प्रयास करता है और एक ऐसे चर को खोज लेता है जिसे संभावित केन्द्र माना जाता है,इसके पश्चात इसी मुख्य चर को ध्यान में रखकर कोड या नमूना चयन करता है।

अक्षीय कोडिंग(Axial Coding)-इसे स्ट्रॉस व कार्बन ने प्रस्तुत किया इसमें शोधकर्ता एक मुख्य चर की एक अन्तिम स्तर पर पहुंच जाता है। यह अन्तिम श्रेणी होती है जिसस पिछ्ली सभी श्रेणियों का पारस्परिक सम्बन्ध होता है।

कोडिंग करना या नमूनाकरण का उदाहरण - किसी संस्थान में कर्मचारियों के मध्य निराशा का अध्ययन के आंकड़ें एकत्र करना

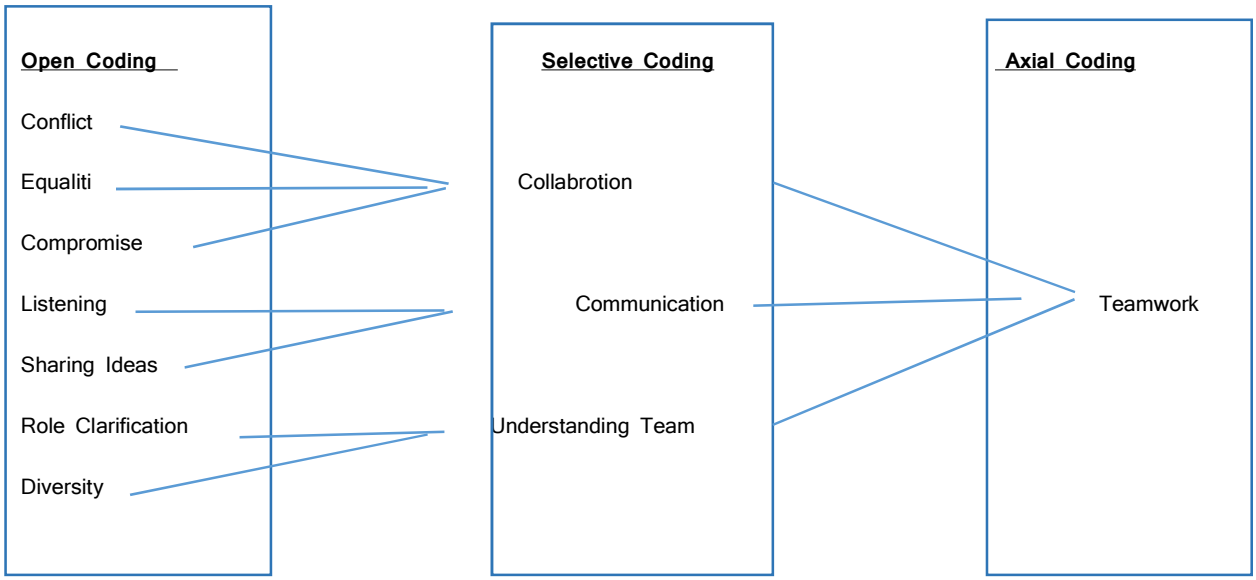

2. **आंकड़ों को छंटना या संगठित करना-**इस स्तर पर शोधकर्ता जो भी आंकड़े एकत्र करता है, उन्हें एक विधिवत तरीके से संगठित कर लेता है,जिससे निष्कर्ष प्राप्त करने में भ्रम उत्पन्न न हो सके।

- **आंकडों का विश्लेषण करना:** निरंतर तुलना का उपयोग करके आंकडों का विश्लेषण करने की प्रक्रिया शुरू की जाती है। इसमें पैटर्न और संबंधों की पहचान करने के लिए आंकडों को एक-दूसरे से और मौजूदा श्रेणियों(कैटेगरी) और कोड (चिन्ह) से तुलना करते है। अवधारणाओं और श्रेणियों की पहचान करने के लिए ओपन कोडिंग का उपयोग करें और फिर उन्हें सैद्धांतिक ढांचे में व्यवस्थित करने के लिए अक्षीय कोडिंग का उपयोग करें।

- **सिद्धांत को परिष्कृत और विकसित करना:** विकासशील सिद्धांत के लिए प्रासंगिक नए आंकडों के स्रोतों की पहचान करने के लिए सैद्धांतिक न्यादर्श का उपयोग करें। विश्लेषण प्रक्रिया के दौरान उभरने वाली अंतर्दृष्टि और विचारों पर चिंतन करने के लिए संक्षेपण का उपयोग करें। तब तक आंकडों को एकत्र किया जाता है जब तक आंकडों से कोई नयी जानकारी मिलना बन्द नही हो जाती है। जब तक यह घटना की व्यापक व्याख्या प्रदान नहीं करता है, तब तक सिद्धांत को परिष्कृत और विकसित किया जाता है।

- **सिद्धांत को मान्यता देना** : अंत में, नए आंकडों के विरोध द्वारा इसका परीक्षण करके और साथियों और अन्य शोधकर्ताओं से प्रतिक्रिया प्राप्त करके सिद्धांत को मान्यता देने का प्रयास

किया जाता है। यह प्रक्रिया सिद्धांत को परिष्कृत और बेहतर बनाने में मदद करती है, और यह सुनिश्चित करती है कि यह आंकडों पर आधारित है।

- **निष्कर्षों को लिखें और प्रकाशित करना** : एक बार सिद्धांत पूरी तरह से विकसित और मान्य हो जाने के बाद, निष्कर्षों को लिखें और उन्हें अकादमिक प्रकाशनों और प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रसारित किया जाता है।

ग्राउंडेड थ्योरी / जमीनी सिद्धांत का महत्व- जैस कि हम जानते है कि यह एक गुणात्मक प्रकार का अनुसंधान होता है जिसमें आवश्यकता होने पर मात्रात्मक आंकडो की सहायता से भी निष्कर्ष प्राप्त किये जाते है। पूर्व इस प्रकार के शोध अध्ययन समाज विज्ञान में किये गये है परन्तु वर्तमान में इस शोध का प्रयोग लगभग सभी क्षेत्रों में किया जा रहा है। इस सिद्धांत का महत्व इस प्रकार है-

1. इस प्रकार के शोध में अनेक माध्यमों से आंकड़े एकत्र किए जाते हैं। इस कारण से, इस सिद्धांत के द्वारा प्राप्त निष्कर्ष विश्वसनीय और वैध होते हैं।
2. इस शोध से तथ्यों के लिए कारणों व विश्लेषण की जानकारी प्राप्त होती है। जिससे तथ्यों के कारणों का वास्तविक ज्ञान होता है।
3. इस सिद्धांत में सरल के कठिन की ओर अर्थात आगमनात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है।यह अवलोकन और एकत्रित आंकड़ों पर आधारित होती है।
4. इस सिद्धांत यह पता चलता है कि किसी नई जानकारी के बाद कैसे आधारभूत ज्ञान बदल सकता है।
5. इस सिद्धांत के आंकड़े एकत्र करके सही ढंग से व्यवस्थित करके इनको लिखित रूप में दिया जाता है। इससे सही निष्कर्ष प्राप्त होने की संभावना बढ़ जाती है।
6. यह सिद्धांत नीतियों को बनाने व मूल्यांकन करने में सहायक होता है।
7. यह सिद्धांत बाजार में उपभोक्ता की मांग और पसंद का विश्लेषण करने में मदद करता है।
8. यह विधि शिक्षा, मनोविज्ञान, प्रबन्धन, महिला अध्ययन आदि क्षेत्रों संस्थागत व्यवहार,समाजिक अन्तर्सम्बन्ध और स्वास्थ्य देखभाल के लिए सबसे अच्छी विधि मानी जाती है।

ग्राउंडेड थ्योरी / जमीनी सिद्धांत की कमियां-

1. इस शोध को करने के बड़े स्तर पर आंकड़े एकत्र करने होते है। जोकि कठिन और समय लगने वाला कार्य है।

2. इस विधि के अधिक विस्तृत होने के कारण इसमें धन अधिक खर्च होता है।

3. इस विधि को करने के लिये विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

4. इस विधि को करने के लिए कोई श्रेणी बनाने के लिए मानक नियम नही है।

5. यह कठिन शोध कार्य होता है क्योंकि इसके सभी आंकड़े गुणात्मक होते है और उन्हें व्यवस्थित करना कठिन होता है।

6. इसमें यदि शोधकर्ता सही से बिना प्रभावित हुए कार्य नही कर पाता है तो निष्कर्ष भेदभाव पूर्ण हो जाते है।

संदर्भ-सूची-

- http://www.ncbi.nlm.gov
- **IGNOU MPC-005**
- http://egyankosh.ac.in
- http://en.wikipedia.org